पूजा के फूल

पूजा के फूल

आत्मा की चाय

(Bed Tea For The Soul)

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

५ बार

१) मन २) बुद्धि ३) शरीर ४) परिवार
५) बाहर जहां भी जाते है।

आत्मा के लिए नाश्ता
(Breakfast For The Soul)

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ५ बार

क्या कृपा चाहिए

"करो दया, करो दया, करो दया मेरे सांई ऐसी मति
दीजे मेरे ठाकुर सदा २ तुध ध्याई"

स्वास स्वास सिमरु गोविन्द मन अन्तर की
"उतरे चिन्त".

II

जाचक जन जाचे प्रभु दान
कर कृपा देवो हरि नाम
साध जना की मांगू धूरि
पारब्रह्म मेरी श्रद्धा पूर
सदा सदा प्रभु के गुण गाऊं
स्वास स्वास प्रभु तुम्हें ध्याऊ
चरण कमल सिऊ लागे प्रीत
भगति करु प्रभु की नित नीत
एक ओट एको आधार
नानक मांगे नाम प्रभु सार

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी

दीन दयाल विरद्व सभारी
हरे नाथ मम संकट भारी

राम कृपा नाशहो सब रोगा
जो एही भाँति बने सयोगा

जा पर कृपा राम की होई
तां पर कृपा करे सब कोई

"अब प्रभु कृपा करो एहीं भाति
स्व तज भजन करूं दिन राती"

'जाँ पर कृपा दृष्टि अनुकूला
ता ही न व्याप जिविध भवगूला"
"राखा एक हमारा स्वामी"
सगल घटा का अन्तरयामी"
"ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे
हरि नानक विसर न काहू बेरे"
"जगत जलंधा राख लै
अपनी कृपा धार
जित द्वारै उभरै जिते ले हो उभार"

सतगुरू सुख वेखालिआ
सच्चा शब्द विचार

नानक अवर न सूझई
हरि बिनु नरूशनहार"

III

दीन दरद दुख भजना
हरि घट घट नाथ अनाथ
शरण तुम्हारी आइओ
नानक के प्रभु साथ

IV

सकल द्वार को छाड़ के
गहयो तुहारों द्वार
बाहे गहे की लाज अस
गोबिन्द दास तुहार

V

जे मैं भूल विगाड़या
न कर मैला चित्त
साहब गौरा लौड़िय
नफर विगाड़े नित

VI

जैसा क़ैसा हूँ मैं तेरा
क्षमा करो सब अवगुण मेरा

जेता समुद्र सागर नीर भरिआ
तेते अवगुण हमारे

दया करो किछ मेहर उपावो
डुबदे पत्थर तारे

जीअड़ा अग्नि बराबर तपै
भीतर वगे काती
प्रणवत नानक हुक्म पछाणे
सुख होवे दिन राती

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणनम् त्वमेव
त्वमेव सर्वम मम देन देव
श्री राम जय राम जय जय राम
शंकर हरि ओ जय २ सिया राम

शब्द

मोहे निर्गण सब गुणे विहूण
दया धार अपना कर लीन्हा

II

मेरे मन तन हर गोपाल सोहाइआ
कर कृपा प्रभु घर में आया
मोहे निर्गुण—

III

भक्त वत्सल भय काटनहारे
संसार सागर अब उतरे पारे
मोहे निर्गुण—

IV

पतित पावन प्रभु बिरद वेद लिखिआ
पार ब्रहम मैं नयनों पेखिआ

V

साध संग प्रगटे नारायण
नानक दास सब दुख पलायण

शब्द

जिऊ भावे तिऊ मोहे प्रतिपाल
पार ब्रहम परमेश्वर सतगुरु
हम बारिक तुम पिता कृपाल
जिऊ भावे·····

II

मोहे निगुँण नाही कोय २
पहुँच न सकऊं तुम्हारी घाल
जिऊ भावे·····

III

अन्तरयामी पुरख स्वामी
अनबोलत ही जान हो हाल
जिऊ भावे

IV

मोहे निगुणी गुण नाही कोय
जिऊ पिउ सब तुम्हारा माल
जिऊ पावे·····

V

तन मन शीतल होय हमारो
नानक प्रभु जो नदर निहाल
जिऊ मावे·····

शब्द

एका टेक मेरे मन चीत
जिस किछ करणा सो हमरा मीत
एका टेक·····

II

मीत करे सोई हम माना
मीत के करतव कुशल समाना
एका टेक·····

III

मीत हमारा अन्तरयामी
समरथ पुरख पारब्रह्म स्वामी
एका टेक·····

IV

मीत हमारा बेपरवाह
गुरु कृपा ते मोहे असनाह
एका टेक·····

V

हम दासे तुम ठाकुर मेरे
मान महत नानक प्रभु तेरे
एका टेक·····

शब्द

राम रंग कदे उतर न जाये
कर कृपा गुरु दिम्रा बताए

II

हरि रंए राता सो मन साता
लाल रंग पूर्ण पुरख विधाता
राम रंग·····

III

सतेह संग बैठ गुन गावे
तां का रंग न उतरे जावे
राम रंग·····

IV

गुरु रंगे से गये निहाल
कहो नानक गुरु गये है दयाल
राम रंग·····

शब्द

राखा एक हमारा स्वामी
सगल घटा का अन्तरयामी

II

अठत सुखिया बैठत सुखिता
भऊ नही लागे जा ऐसे बुझिया
राखा.....

III

सोये अचिंता जाग अचिंता
जहाँ कहाँ प्रभु तूँ वरतता
राखा एक...

IV

घर सुख वसिया बाहर सुख पाया
कहो नानक गुरु मत्र छटाइआ
राखा एक

भजन

निवल के प्राण पुकार रहे जगदीश हरे २
स्वासो के स्वर झंकार रहे
जगदीश हरे २

II

आकाश हिमालय सागर में
पृथ्वी पातषि चराचर में
यह मधुर बोल गुजार रहे
जगदीश हरे···

III

जब दया दृष्टि हो जाती है
सूखी खेती हरियाती है
इस आस पै जन उच्चार रहे
जगदीश हरे···

IV

सुख दुख की चिन्ता है ही नही
भय है विश्वास न जाये कही
टूटे न लगा यह तार रहे
जगदीश हरे···

V

तुम हो करुणा के धाम सदा
सेवक है राधेश्याम सदा
बस इतना सदा विचार रहे
जगदीश हरे···

भजन

पितु मात सहायक स्वामी सखा तुम हीं इक नाथ हमारे हो
जिनके कछु और आधार नही, तिनके तुम ही रखवारे हो
पितु मात···

II

प्रतिपाल करो सगरे जग को अतिशय करुणा उरधारे हो
पितु मात···

III

सुख शान्ति निकेतन प्रेम निधे
मन मन्दिर के उजियारे हो
पितु मात सहायक···

IV

तुम सो प्रभु पांऊ प्रताप हरि
कहि के अब और सहारे हो
पितु मात···

V

इस जीवन के तुम जीवन हो
इन प्राणन के तुम प्यारे हो
पितु मात सहायक···

भजन

जरा आ शरण मेरे राम की
मेरा राम करुणा निधान है
जरा आ शरण ··

II

घट घट में है वही रम रहो
वह तो जगत का भगवान है
जरा आ शरण ·

III

भक्ति मे उस की तू हो मान
उस के पाने की तू लगा लग्न
तेरे पाप सब धुल जायेंगे
प्रभु का नाम ऐसा महान है
जरा आ शरण···

IV

लिया आसरा जिस नाम का
वही बन गया मेरे राम का
जिस नाम से पत्थर तरे
फिर तेरा तरना आसान है
जरा आ शरण···

V

लगी भीलनी को यह आस थी
प्रभु कब बुझेगो मेरी प्यास भी
जूठे बेर खाये राम ने
प्रभु का नाम ऐसा महान् है
जरा आ शरण...

VI

तेरी दासी कब से पुकारती
तेरे चरणों में अर्ज गुजारती
मत भूल न जाना ए प्रभु
तेरी दासी बड़ी अनजान है
जरा आ शरण...

VII

पल पल में उसको तू याद कर
उसके आगे सब फरियाद कर
तेरे पाप सब धुल जायेंगे
प्रभु का नाम ऐसा महान
जरा आ शरण...

VIII

कर सेवा दुनियांदारों की
बलहीन बेशक्त बेचारों की
तेरे बन्धन आप कट जायेंगे
प्रभु का नाम ऐसा महान है
जरा आ शरण...

भजन

सीता राम सीता राम सीता भजन कहिये
जांही विधि राखे राम तांहीं विधि रहिये
सीता राम···

II

मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में
तू अकेला नही प्यारे राम तेरे साथ में
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये
सीता राम ··

III

किया अभिमान तो फिर मान नही पायेगा
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को पायेगा
फल की आशा त्याग शुभ कर्म करते रहिये
सीता राम सीता राम···

IV

जिन्दगी की डोर सौप हाथ दीनानाथ के
महलो में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे
धन्यवाद निर्विवाद सदा करते रहिये
सीता राम सीता राम सीता राम···

V

नाता एक राम जी से बाकी नाते छोड़ दे
आशा एक राम जी से बाकी आशा छोड़ दे
साधू संग बैठ २ नाम रंग रगिये
काम रस त्याग कर नाम रस पगिये
सीता राम सीता राम···

भजन

सब से प्यारा सबसे न्यारा
प्रभु जी नाम तुम्हारा २
सब से ..

II

जिस का कोई नही जग में
उस का तू ही सहारा
सब से प्यारा...

III

दो आते जाते श्वासों का
मान करे हम कैसा
अभिमान करे हम कैसा
सब कुछ देने वाला तू
अभिमान करें हम कैसा २
चाहे सुख दे चाहे दुख दे
सब कुछ हमको प्यारा
सब से प्यारा...

IV

तेरे द्वारे आ के प्रभु जी
कोई गया न खाली २
मैं भी बन के आई प्रभ जी
दर पे तेरे सवाली २

बुझ न जाये दीपक मेरा
हो न जाये अंधियारा
सब से प्यारा···

V

अपने द्वार की भक्ति दे दो
अपनी दासी बना लो
प्रभु अपनी दासी बना लो
भूले अगर हम कभी तो हम को
अपनी राह दिखा दो २
तुम तो सब कुछ जानते हो प्रभु
तुम मन का उजियारा
सब से प्यारा···

भजन

तुम्हारे दिव्य दर्शन की
मैं इच्छा ले के आई हूँ
पिला दो प्रेम का अमृत
पिपासा लेकर आई हूँ

II

रत्न अनमोल लाते लाने वाले भेट को तेरी
मैं केवल आंसूओं की मजु माला लेके आई हूँ
तुम्हारे दिव्य···

III

जगत के रंग सब फीके
तू अपने रंग में रंग दे
मैं अपनी यह महा बदरंग
बाना ले के आई हूं
तुम्हारे दिव्य···

IV

प्रकाशनन्द हो जाये मेरी अंधेर कुटिया में
तेरा यह आसरा विश्वास ले के आई हू

भजन

भज गोबिन्द गोबिन्द गोपाला
तूं फेर सदा हरि की माला
तेरा आप बनेगा प्रभु रखवाला
भज गोबिन्द···

II

कर सेवा दुनियादारों की
बलहीन बेशक्त बेचारो की
और फेर सदा हरि की माला
भज गोविन्द···

III

ऊठत बैठत हरि २ ध्याइये
मार्ग चलत हरि गुण गाइये
तूं फेर सदा हरि की माला
तेरा आप बनेगा प्रभु रखवाला
भज गोबिन्द···

भजन

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार
उदासी मन काहे को करे
उदासी···

II

नय्या तेरी राम हवाले
लहर लहर प्रभु आप सभाले
डोरी सौंप दे तू प्रभु जी के हाथ
उदासी मन···

III

तुझे किनारा मिल जायेगा
परम सहारा मिल जायेगा
चप्पु सौंप दे तू प्रभु जी के हाथ
उदासी मन···

IV

तू निर्दोष तुझे क्या डर है
पग पग पर तेरा राम साहिल है
जरा भावना से कर तू पुकार
उदासी मन···

शब्द

कर कृपा कृपाल आपे बख्श लै
सदा २ जपी तेरा नाम
सतगुरु पाई पै
कर कृपा कृपाल···

II

मन तन अन्तर वस दुखां नास होय
हथ दे आपे रख व्यापै भऊ न कोय
कर कृपा···

III

गुण गांवा दिन रैण ऐते कम लाये
संत जनां के संग हउमैं रोग जाये
कर कृपा···

IV

सर्व निरन्तर खसम एको रव रहया
गुरु प्रसादि सच सचो सच लेहा

V

दया करो दयाल अपनी सिफत दे
दरशन देख निहाल नानक प्रीत एह

भक्त हमेशा यही कहता है कि जिसने जो भी करना है वह मेरा मित्र है अर्थात भगवान मेरा सदा का साथी है उसने जो भी करना है मेरे लिए अच्छा ही करना है।

शब्द

एका टेक मेरे मन चीत
जिस किछ करना सो हमरा मीत
एका टेक···

II

मीत करे सोई हम माना
मीत के करतव कुशल समाना
एका टेक···

III

मीत हमारा अन्तरयामी
समरथ पुरख पारब्रह्म स्वामी
एका टेक···

IV

मीत हमारा बेपरवाह
गुरू कृपा ते मोहे असनाह
एका टेक···

शब्द

अब दास अपने प्रभु को कहता है कि हे मेरे राम आप राम भी है और मय्या भी हैं इस लिए मैं आपका नाम राम और मय्या अलग न बुला कर रामइया इकठा ही बुलाता हू

रामइआ हम बारिक तेरा
काहे न खडस अवगुण मेरा

II

सुत अपराध करत हैं जेते
जननी चित न राखत तेते

III

जे अति क्रोप करे कर धाइआ ।
तऊ भी चितन राखस माया

IV

चित भवन मन परिओ हूमारा
नाम बिना कैसे उतरस पारा
रामइया...

V

देह विमल मत सदा शरीरा
सहज सहज गुण रवे कबीरा
रामइया...

शब्द

अब भक्त कहता है हे प्रभु मैं हूं तो आपका बच्चा परन्तु माया के बन्धनों में आपको भूल जाता हूं सो आप कृपा करना कि माया में रहता हुआ भी आपको निरन्तर याद रखूं सो यह आप ही कृपा करना कि मेरे जीवन के जीवन आप हो इस लिये मुझे आप हो अपनी ओर आकर्षित करना सो कहते हैं

राम गुसइयां जींअ के जीवना
मोहे न विसारो मैं जन तेरा

राम गुसइया

II

मेरीं संगत पोच सोच दिन राती
मेरा कर्म कुटिलता जन्म कुभांति

राम गुसइया

III

मेरी हरो विपत जन करो सुभाई
चरण न छांडू शरीर कल जाई

राम गुसइया

IV

कहे रविदास परऊ तेरी सांभा
वेग मिलो जन कर न विलंभा

राम गुसइया···

शब्द

तू मेरो प्यारो तां कैसी भूखा
तू मन बसिया लगे न दूखा
तू मेरा···

II

नऊधिन तेरे सगल निदान
इच्छा पूरक रखे निदान
तू तेरो प्यारो···

III

जां तुध भावे तां हरि गुण गाऊ
तेरे घर सदा २ है न्याओ
तू मेरो प्यारो···

IV

जो तूं करे सोई परवान
साचे साहब तेरा सच फरामण
तू मेरो···

V

साचे साहब अलख अभेव
नानक लाया लागा सेव
तू मेरा···

भजन

पतित पावन राम २
पुष्परति पुराश्वर राम
पावन नाम तारक राम
पाप विमोचन राम

दानव भजंन राम २
दशरथ नन्दन राम २
पावन नाम तारक राम
पाप विमोचन

कीर्तन

राधा कृष्ण गोबिन्दा गोपाल राधा मधवा
गोपाल राधा माधवा
गोपाल राधा माधवा
राधा कृष्ण गोबिन्दा गोपाल राधा माधव

II

कंस हारी जम जय मुरारी जय २ माधव मुकन्द सरि बिहारी जय

कंस हारी जय २ मुरारी जय २

भजन

मेरे राम सहारा बन जाओ
मेरे राम सहारा बन जाओ

प्रभु आ जाओ प्रभु आ जाओ
मेरे राम सहारा बन जाओ

तेरी प्रीत जो ऐसी लगी मन में
मुझे कुछ भी न सूझा जग में
मैं तेरी हुई तू मेरा हुआ
ऐसी लग्न मेरे मन में

मेरे राम सहारा बन जाओ
प्रभु आ जाओ प्रभु आ जाओ

तेरी छवी जो मन में बसाई है
सारी सृष्टि मेरी अब खुदाई है
अब तेरा सहारा काफी है

मेरे राम सहारा बन जाओ
प्रभु आ जाओ प्रभु आ जाओ

शब्द

आओ तो मिलकर अरदास करे हे दाता
अपनी भक्ति का दान दो क्योंकि आप की भक्ति से
ही मेरा कल्याण हो सकता है

अरदास

दोय कर जोड़ कर करूं अरदास
तुध भावे तां आणे रास

II

कर कृपा अपनी भक्ति लाये
जन नानक प्रभु सदा ध्याये
दोय कर जो

III

कीता लोड़े सो प्रभु होय
तुझ बिन दूजा नही कोय
दोय कर···

IV

जो जन सेवे तिस पूर्ण काज
दास अपने की राखो लाज
दोय कर···

V

तेरी शरण पूर्ण दयाला
तुझ बिन कवन करे प्रतिपाला

VI

जलथल महिअल रहया भरपूर
निकट बसे नाही प्रभु दूर
दोय कर···

VII

लोक पति ओर किछु न पाइए
साच लगे तो हउमै जाइए
दोय कर···

VIII

जिस नू लाहे लहे सो लागे
ज्ञान रत्न अंतर तिस जागे

IX

दुरमत पाये परम पद पाये
गुरु परसादी नाम ध्याये
दोय कर ··

शब्द

जो माँगे ठाकुर अपने तें
सोई साँई देवे
जो मांगे···

II

नानक दास मुख ते जो बोले
रपा उठा सच होवे
जो मांगे···

III

चतुर दिशा कीन्ही बल अपना
सिर ऊपर कर धारिओ
कृपा कटाक्ष अवलोकन कीन्हो
दास का दुख विदारिओ
जो माँगे

IV

हरि जन राखे गुरु गोबिन्द
राखे गुरु गोबिन्द
कंठ लाये अवगुण सब मेरे
दयाल पुरख बख्शद
जो मांगे ठाकुर

लोड़ो मांगनी है भगवान से
विषय विकार सारे जला डालने हैं।
आओ मिल कर मांगे अपने प्रभु से
मांगना भई मांगना हरि का नाम माँगना
त्यागना भई त्यागना लोभ मोह त्यागना
त्यागना भई त्यागना काम क्रोध त्यागना
जागना भई जागना हरि कीर्तन में जागना
चाँदना भई चांदना हरि जी अन्दर चाँदना
शरणागना शरणागना मैं हरि की शरणागना

भजन

क्योंकि यह प्रभु नाम ही नही जपा जाता
सारा शेष काम तो हो ही जाता है वह तो
जगत के सारे जीव कर लेते है कहते हैं
बिन किस्मत जपया नही जादा
राधेश्याम मुरारी
बिन किस्मत जपय...
सावल शाह गिरधारी बिन किस्मत जपया...
मेरा मोहन गिरधारी बिन किस्मल जपया
बिन किस्मत जपया नही...
हिम्मत कर सतसंग विच आवन
पाप कर्म रुकावट पावन
जींहा की करे विचारी
बिन किस्मत जपया

शब्द

बिसर नाही ए वड दातें
कर कृपा भगतन संग राते
बिसर नाही ए वड दातें

II

दिनस रैण जीओ तुध ध्याई
एह दान मोहे करना जीओ
बिसर नाही ए वड दातें

III

माटी अंधो सुरत समाई
सब किछ दीआ भलिआ जाई

अनद विनोद खोज तमोश
तुध भावे सो होणा जीओ
विसर नाही ए वड दाते

IV

जिस दा दिता सब किछ लहणा
छतीह अमृत भोजन खाना

सेज सुहावी शीतल पवना
सहज केल रंग करना जीओ
विसर नाही ए वड दाते

V

[illegible] बुद्धि दीजे जित विसरे नाही
[illegible] मति दीजे जित तुध ध्याई
[illegible] तेरे गुण गावां
[illegible] नानक गुरु चरणा जीओ
विसर नाही ए वड दाते

रामायण

भक्त के लक्षण :—

जिन भक्तों में यह निम्नलिखित गुण है
उनके हृदय में श्री राम जी निवास करते हैं
बाल्मीकी ऋषि भगवान को बताते हैं हे प्रभु
आप उनके हृदय आपनिवास करो

बाल्मीकी ऋषि कहते हैं
सुनहु राम अब कहँ निकेता
जहाँ बसो सिय अनुज समेता

जिनके श्रवण समुद्र समाना
कथा तुम्हार सुभग सरि नाना

भरहि निरंतर होय न पूरे
तिन के हिय तुम गृह कर रुरे

लोचन चातक जिन कर राखे
रहहि दरस जलधर अभिलाखे

निदरहि सरित सिधु सरवारी
रुप विंदु जल होय सुखारी

तिन के हिय सदन सुखदायक
बसहु बधु सिय सह रघुनायक

दोहा

जस तुम्हारे मानस विमल
हसिनि श्रीपा जासू

मुक्ताहल गुन गन चुनही
राम बसो हिय तासू

प्रभु प्रसाद सुची सुभग सुबासा
सादर जासु लहई नित नासा

तुम्हहि निवेदित भोजन कर ही
प्रभु प्रसाद पट भूषण धरही

शीश नवहि सुर गुरु द्विज देखी
प्रीति सहित कर विनय विषेषी

[illegible] करहिं राम पद पूजा
[illegible] हृदय नही दूजा

[illegible] तीरथ चल जाही
[illegible] तिन के मन माही

मंत्रराज नित जपहि तुम्हारा
पूजहि तुमही सहित परिवारा

तरपन होम करहि विधि नाना
विप्र जेवाई देहि बहु दाना

तुम ते अधिक गुरु जीअँ जानी
सकल भाय सेवहि सनमानी

दोहा

सब कर मागहि एक फल
राम चरण रति होय
तिन के मन मन्दिर बसो
सिय रघुनन्दन दोय

काम कोह मद मान न मोहा
लोभ न छोभ न राग द्रोहा

जिन के कहट दम्भ नही माया
तिनके हृदय बसो रघुराया

सब के प्रिय सब के हितकारी
दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी

कहहि सत्य प्रिय वचन विचारी
जागत सोवत शरण तुम्हारी

तुम्हहि छाड़ गति दूसर नाही
राम बसहु तिन्ह के मन माही

जननी सम जानहि पर नारी
धन पराव विष ते विष भारी

जे हरषहि पर सपति देखी
दुखित होय पर विपति विषेषी

जिन्हहि राम तुम प्राण प्यारे
तिन्ह के मन शुभ सदन तुम्हारे

दोहा

"स्वामी सावा पितु मातु गुरु
जिन के सब तुम तात
मन मन्दिर तिन के बसो
सिय सहित दोऊ भ्रात"

अवगुणा तज सब के गुन गहही
विप्र धेनू हित संकट सहही

नीति निपुन जिन्ह कह जग लीका
घर तुम्हारे तिन्ह कर मन नीका

गुन तुम्हार समुझहि निज दोषा
जे हो सन भाति तुम्हारा भरोसा

राम भगत प्रिय लागे ही जेही
तेहि उर बसहु सहित वैदेही

"जाति पाति धन धर्म बढाई
प्रिय परिवार सदन सुखदाई"

सब तजि तुम्हहि रहई उरलाई
तेहि के हृदय रहहु रघुराई

स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना
जह तह देखे धरे धनुवाणा

कर्म वचन मन राऊर चेरा
राम करहु तेही के डर डेरा

जाही न चाहिअ कबंहु कछ
तुम सन सहज सनेहु

बसहु निरतर तासू मन
सो राऊर नेज नेह गेह

नवदा भक्ति

भीलनी को जो बताई

१ प्रथम भक्ति सतन कर सगा
२ दूसरी रति मत कथा प्रसंगा

दोहा

गुरू पद पंकज सेवा

३ तीसरी भक्ति अमान

४ चौथी मम गुण गन
करहि कपट तज गान

५ मंत्र जाप मम दृढ विश्वासा
पचम भजन सो वेद प्रकाशा

६ छट दम शील विरति बहु कर्मा
निरत निरंतर सज्जन धर्मा

७ सातव सम मोहि मय जग देखा
मोते संत अधिक कर लेखा

आठव यथा लाभ संतोषा
सपनेहु नहो देखहि पर दोषा

नवम् सरल सब सन सनेह छल हीना
मम भरोस हिय हर्ष नै दीना

शब्द

रामइआ हऊ बारिक तेरा
नाहि न खंडस अवगुण मेरा
रामइआ हऊ ...

II

जे अति कोप करे कर छाइआ
तो भी चित न राखस माया
रामइआ हऊ ...

III

चित भवन मन परिग्रो हमारा
नाम बिना कैसे उतरस पारा
रामइग्रा हऊ...

IV

देह विमल मत सदा सरीरा
सहज सहज गुण रवे कबीरा
रामइग्रा...

शब्द

मोहे न विसारो मैं जन तेरा
मोहे न विसारो मैं जन तेरा
राम गुसइग्रा जीऊ के जीवना
मोहे न विसारो मैं जन तेरा

II

मेरी संगम पोच सोच दिन राती
मेरा कर्म कुटिलता जन्म कुभांतिं
राम गुसइयां जीअ के जीवना

III

मेरो हरो विपत्त जन करी सुभाई
चरण न छाडू शरीर कल जाई
राम गुसइयां जीअ...

IV

कहे रविदास परऊ तेरी सांभा
वेग मिलो जन कर न बिलम्बा
राम गुसइयाँ...

शब्द

हऊ बल बल जाऊ रामइआ
कारण कवन अबोल रायइआ
हऊ बल २ रामइआ

II

बहुत जना विछड़े थे माधऊ
बहुत जन्म विछड़े थे माधऊ
विछड़े थे माधउ विछड़े थे माधउ
एह जन्म तुम्हारे लेखे रामइआ
एह जन्म तुम्हारे लेखे रामइआ
हउ बल बल जाउ रामइआ

III

वचनी तोर मोर मन माने
वचनी तोर मोर मन माने
अपने जन को पूर्ण दीजे रामइआ
हउ बल २ जाउ...

शब्द

कवन गुन प्रानपति मिलु मेरी माई
कवन गुन प्रानपति मिलु मोरी माई
रुप हीन बुद्धू बल हीनी
मोहे परदेशन दूर ते आई
कवन गुन प्रानपति मिलु···

II

नाहिन दरब न जोबन माती
मोहे अनाथ की करो समाई
कवन गुन प्रानपति मिलु मेरो माई

III

खोजत खोजन भई वैरागन
प्रभु दरशन को हऊ फिरती तिसाइ
कवन गुन प्रानपति

VI

दीन दयात कृपाल प्रभु नानक
साध संगत मेरी जलन बुझाई
कवन गुद···

भजन

मैं पाउ शान्ति कैसे हरि शरणनम् हरि शरणनम
मिटे सब पाप तव ऐसो हरि शरणनम हरि शरणनम

II

तुझे छोड़ कर प्रीतम मैं किसका आसरा ढूंढू
पड़ु मैं तेरे चरणों में
हरि शरणनम हरि शरणनम

III

तुझे ही हर दम देखु मैं
तुझे हरदम पुकारू मैं
यही मेरे दिल है की
हरि शरणनम हरि शरणनम

IV

दर्श तेरा जब से पाया है
सभी कुछ मैं भुलाया है
हरि शरणनम हरि शरणनम

विकारों से अलग हूं मैं
तुझी में सदा अनुरक्त हूँ मैं
मेरा जीवन है अब निर्मल
हरि शरणनम हरि शरणनम

कमल जैसा यह जीवन है
केवल उसका का नाम सही है
तुझ ही में मिल गई हूं मैं
हरि शरणनम हरि शरणनम

चाह चिन्ता नही मुझको
तेरी ही याद आई है
याद तेरी अब मैं भूली सन
यह मेरी हुई खुदाई है
हरि शरणनम हरि शरणनम

सहारा अब बना तू है
किनारा अब बना तू है
तेरी ही याद आई है
हरि शरणनम हरि शरणनम

मेरे राम सहारा बन गये

जब हम निरन्तर कर कृपा का मंत्र दृढ करते रहते हैं तो ऐसे लगता है कि एक आलौकिक शक्ति मेरा परम सहारा

है जो मुझे हर समय सामने नजर आता रहता है और एक पल के लिए भी मेरी आँखों से ओझल नही होता तो इसके सदके संसार के सारे पदार्थ मुझे अब

अपनी ओर खींच नही सकते तो मैं अब
राजाओं का राजा बन गया है क्योंकि
तुलसीदास जी ने भी कहा है

गोधन गजधन वाजिधन
और रत्न धन खाना
जब आवे सतोष धन
सब धन धूरी समान

अर्थात जब संतोष आ गया तो शेष सारे
धन धूल के समान हो गये तो वह स्वयं
राजा हो गया। सो आओ ऐसा हम भी अनुभव
करें

मेरे राम सहरा बन गये हैं
जीवन का किनारा बन गये हैं

II

जब से तेरी लग्न लगाई
कोई वस्तु नही मन को भाई
अब मेरे चारों और नजारा बन गये हैं
मेरे राम सहारा बन गये
जीवन का किनारा बन गये हैं

III

जब से तेरा दर्शन पाया
मैंने अपना आप भुलाया
मेरा परम सहारा बन गये है
मेरा राम सहारा बन गये हैं
जीवन का किनारा बन गये हैं

IV

अब सोय अचिन्ता जाग अचिन्ता
जहाँ कहाँ प्रभु तू वरतता
मेरे परम सहारा बन गये है
मेरे राम सहारा बन गये है

दोहा

पल पल में सिमरण करुं राम राम श्री राम
भक्ति में मैं मग्न होऊ आठों पहर यही काम

II

तेरा तुझ को दे दिया
मेरा मुझ में नाही
ऐसा भाव जब बन गया
राम अब दूर नाही

III

तेरी ही मैं दासी हूं
निशदिन निहारूं तोहे
ऐसी प्रीति मन में लगो
और न देखे कोय

भजन

अब मोहे राम भरोसा तेरा
अब मोहे राम भरोसा तेरा

II

जब से पीया नाम का प्याला
जीवन बन गया मतवाला
अब मोहे राम भरोसा तेरा

III

तेरे चरणों की प्रीत लगाई,
तुझ पर वारी सारी खुदाई
आवागमन मिट गया मेरा
अब मोहे राम ...

पल पल तेरा नाम ध्याऊं
आठ पहर तेरा दर्शन पाऊं
जीवन सफल हो गया मेरा
अब मोहे राम भरोसा...

इक पल मन को चैन न आवे
याद तेरी दिन रात सतावे

हरदम दर्शन हो गया तेरा
अब मोहे राम भरोसा तेरा

जब से देखी छवि तुम्हारी
तुझ पर बारी दुनियाँ सारी
बलिहारी जीवन मेरा
अब मोहे राम...

खुदा को पाऊ खुदी को मिटाऊ
केवल राम अपने पर बलि जाऊ
बन गया परम सहारा मेरा
अब मोहे राम...

तू ही है मन का उजियारा
तुम पर वारूं जीवन सारा
भाग्य उदय होआ मेरा
अब मोहे राम भरोसा तेरा

भजन

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो
ॐ जयो ॐ जयो

ॐ ही सुख का सार है
जीवन है जीवन आधार है
स्वासौ की माला में नाम पिरो

II

मन की गति सभालिए
भक्ति की आदत डालिए
पल पल अपना वृथा न खो
ॐ जपो···

III

चोला मिला शुभ कर्म का
करने को सौदा धर्म का
कोड़ी के बदले हीरा न खो
ॐ जपो···

शब्द

मेरा प्यारा प्रीतम, सतगुरु रखवाला २
हऊ बारिक दीन, करो प्रतिपाला २
मेरा प्यारा प्रीतम···

II

मधुसूदन मेरे मन तन प्राणा
हऊ हरि बिन दूजा अवर न जाणा
कोई साजन संत मिले बडभागी
मैं हर प्रभ प्यारा दसै जीओ
मेरा प्यारा प्रीतम

III

हऊ मन तन खोजी भाल भालाई
किऊ प्यारा प्रीतम मिले मेरी माई
मिल सतसंगत खोज खोजाई
विच संगत हर प्रभो वसे जीओ
मेरा प्यारा प्रीतम

IV

मेरा मात पिता गुरु सतगुरु पूरा
गुरु जल मिल कमल विग से जीओ
मैं बिन गुरु देखे नीद न आवे
मेरे मन तन वेदन गुरु विरहो लगावे
हरि हरि दया करो गुरु मेला
जन नानक गुरु मिल रहसै जीओ

"मेरा प्यारा प्रीतम सतगुरु रखवाला
हऊ बारिक दीन करो प्रतिपाला"

गीता का बाहरवां अध्याय भक्ति योग के नाम से कहा गया है भगवान अर्जुन को बताते हैं कि वास्तव में भक्ति क्या है संसार में रहते हुए माया के विकारों का अपने मन में न आने देना ही वास्तव में भक्ति है क्योंकि भगवान अर्जुन को समझाते हैं कि तू नित निरंतर अब मेरे को अर्पण कर दो तो तुम मुझे बड़े प्यारे लगोगे अब मन तो उसी के अर्पण कर सकते हैं जिस में प्रेम हो।

बाहरवां अध्याय

श्लोक

बाहरवा अध्याय (अर्जुन ने कहा)

अव्यक्त को भजते कि जो धरतेतुम्हारा ध्यान
इन योगियों में योग बेला, कौन श्रेष्ट महान हैं

II

श्री भगवान ने कहा
कहता उन्हे मैं श्रेष्ट मुझ में चित जो धरते सदा
जो युक्त हो श्रद्धा सहित मेरा भजन करते सदा

III

अव्यक्त अक्षर अनिर्देश्य अचिन्तय नित्य स्वरूप को
भजते अचल कूटस्थ उतम सर्व व्यापी रुप को

IV

सब इन्द्रियां साधे सदा समबुद्धि ही धरते हुए
प्राप्त वह मुझे वह पार्थ प्राण मात्र हित करते हुए

V

अव्यक्त में आसक्त जो होता उन्हें अति क्लेश है
पाता पुरुष यह गति सहन करके विपति विशेष है

6

हो मत्परायण कर्म सब अर्पण मुझे करते हुए
भजते सदैव अनन्य मन से ध्यान जो धरते हुए

7

मुझ में लगाते चित उनका शीघ्र कर उद्धार मैं
इस मृत्युमय संसार से बेड़ा लगाता पार मैं

8

मुझ में लगाले मन मुझी में बुद्धि को रख सब कही
मुझ में मिलेगा फिर तभी इसमें कभी संशय नहीं

9

मुझ में धनंजय ! जो न ठीक प्रकार मन पाओ तसा
अभ्यास योग प्रयत्न से मेरी लगा लो लालसा ।।

10

अभ्यास भी होता नहीं तो कर्म कर मेरे लिये
सब सिद्धि होगी कर्म भी मेरे लिए अर्जुन किये

11

यह भी न हो तब आसरा मेरे लिये कर योग ही
कर चित स्वयं कर्म फल के त्याग सारे भोग ही

12

अभ्यास पथ से ज्ञान उत्तम, ज्ञान से गुरु ध्यान है
गुरु ध्यान से फल त्याग करता त्याग शान्ति प्रदान है

13

बिन द्वेष सारे प्राणियों का निज करुणावान हो
सम सुख दुख न मदन ममता क्षमा शील महान हो

14

जो तुष्ट नित मन बुद्धि से मुझ में हुआ आसक्त है
दृढ निश्चिय है सयमी प्यारा मुझे वह भक्त है

15

पाते न जिससे क्लेश जन उन से पाता आप हो
भय क्रोध हर्ष विषाद बिन प्यारा मुझे है जन वही

16

जो शुचि उदासी दक्ष है जिसको न दुख बाधा रही
इच्छा रहित आरम्भ त्यागी भक्त प्रिय मुझको वही

17

करता न द्वेष न हर्ष जो बिन शोक है बिन कामना
त्यागे शुभा शुभ फल वही है भक्त प्रिय मुझको घना

18

[illegible] शत्रु मित्रों से सदा अपमान मान समान
[illegible] सुख दुख सम जिसे आसक्ति बिन मतिमान है

19

निन्दा प्रशसा सम जिसे, मौनी सदा सन्तुष्ट ही
अनिकेत निश्चल बुद्धि मय प्रिय भक्त है मुझ को वही

20

जो मत्परायण इस अमृतमय धर्म में ननुरक्त है
वे नित्य श्रद्धावान जन मेरे परम प्रिय भक्त है

चौपाई

कोमल चित दीनन पर छाया
मन वच कर्म मम भगति अमाया

II

सबहि मान प्रद आप अमानी
भरत प्राण सम मन ते प्रानी

कीर्तन

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे
जय कृष्णा जय कृष्णा कृष्णा –३–
राधे हमें भी राह दिखा दे
प्रभु चरणों में हमें लगा दे जय...

सत्य का राह दे धर्म का राह दे,
शान्ति का राह दे दया का राह दे जय,

हमारा मन विषयों से हटा दे,
प्रभु चरणो की प्रीत लगा दे,
जय राधे जय राधे, २

नाम जपु मैं तेरा कृष्णा
मिट जाये मेरी सारी तृष्णा जय...

मन में बस जाओ हे श्री कृष्णा
जीहा में तू ही मेरे कृष्णा, जय...

मन में देखु छवि तुम्हारी,
सदा सदा जांऊ बलिहारी,
ऐसा कर दो श्री कृष्ण, जय ..

तेरी छवी पर मैं बलिहारी,
वारु मैं अब दुनियासारी
छवि दिखाना श्री कृष्ण जय...

भजन

मुझे अपना जीवन बनाना न आया
हां रुठे हरि को मनाना न आया

II

रहा बोलता अटपटी बोलियों में
हरि नाम का गीत गाना न आया
मुझे अपना...

III

किसी काम न आई न तेरी कमाई
हरि नाम का धन कमाना न आया
मुझे अपना जीवन...

मन में देखु छवि तुम्हारी,
सदा सदा जांऊ बलिहारी,
ऐसा कर दो श्री कृष्ण, जय ..

तेरी छवी पर मैं बलिहारी,
वारु मैं अब दुनियासारी
छवि दिखाना श्री कृष्ण जय...

भजन

मुझे अपना जीवन बनाना न आया
हां रुठे हरि को मनाना न आया

II

रहा बोलता अटपटी बोलियों में
हरि नाम का गीत गाना न आया
मुझे अपना...

III

किसी काम न आई न तेरी कमाई
हरि नाम का धन कमाना न आया
मुझे अपना जीवन...

III

राम का रंग चढा मुझमे भारी
तब छूटी यह सारी दुनियादारी
लगी जब लग्न मेरी अन्दर से सारी
तो प्रभु को भी दर्शन दिखाना आया
मुझे अपना जीवन...

IV

दिखाया प्रभु ने दर्शन मुझे अपना
तो यह जीवन मुझे जैसा एक सपना
सुख दुःख का भेद सब गवाना तब आया
मुझे अपना जीवन बनाना अब आया
हाँ अपने प्रभु को अपना बनाना अब आया

V

दर्शन बिना मुझ को चैन न आये
एकान्त वास तब मेरे मन को भाये
तब प्रभु चुपचाप मेरे मन में आये
सारा दुखड़ा प्रभु को सुनाना तब आया
मुझे अपना जीवन बनाना अब आया
अपने प्रभु को अपना बनाना अब आया
दुखड़ा सुनाया प्रभु को जब अपना
तो सुख ही सुख लगा जीवन को लगना
तो शान्ति और आनन्द पाना अब आया
मुझे अपना जीवन

III

राम का रंग चढा मुझमे भारी
तब छूटी यह सारी दुनियादारी
लगी जब लग्न मेरी अन्दर से सारी
तो प्रभु को भी दर्शन दिखाना आया
मुझे अपना जीवन...

IV

दिखाया प्रभु ने दर्शन मुझे अपना
तो यह जीवन मुझे जैसा एक सपना
सुख दुःख का भेद सब गवाना तब आया
मुझे अपना जीवन बनाना अब आया
हाँ अपने प्रभु को अपना बनाना अब आया

V

दर्शन बिना मुझ को चैन न आये
एकान्त वास तब मेरे मन को भाये
तब प्रभु चुपचाप मेरे मन में आये
सारा दुखड़ा प्रभु को सुनाना तब आया
मुझे अपना जीवन बनाना अब आया
अपने प्रभु को अपना बनाना अब आया
दुखड़ा सुनाया प्रभु को जब अपना
तो सुख ही सुख लगा जीवन को लगना
तो शान्ति और आनन्द पाना अब आया
मुझे अपना जीवन

मीरा ने उनको चरणों मे शीश नवाय
सन्तो में बैठी मीरा को भगवान नजर आये

III

कैसी मनोहर छवी है प्यारी
तुझ पर जाऊ सदा बलिहारी
दासीं तेरी छवि पर बलि बलि जाये,
सन्तो में बैठो मीरा···

IV

बाते शुरु हो गई

कैसे हो तुम मोहन प्यारे
मेरे मन को हरने वाले
अन्तःपटल पर ला लिया डेरा
हृदय निर्मल हो गया मेरा
मेरे प्रीतम ही प्रीतम अब नजर आये
सन्तो में बैठी मीरा को भगवान···

V

जहां भी बैठू तुम संग बैठो
जहां भी जाऊ तुम संग जाओ
तेरे ही ध्यान में मन मग्न हो जाये
सन्तो में बैठी मीरा···

VI

आनन्द आनन्द आनन्द छाया
सारे दुखो का डेरा मिटाया
केवल तेरा ही नाम चित आये
सन्तो में बैठी मीरा···

VII

श्याम अब तुझ बिन रह न सकुं मैं
हर पल तेरे ही गुण गाऊं मैं
तेरे चरणों पे बलि —२ जाये
सन्तों में बैठी मीरा···

तुझ मे मगन रहु दिन है राती
जग की बाते अब नही सुहाती
अन्तर तेरी ही प्रीत लगाये
सन्तों बैठी मीरा···

अज्ञान अन्धेरा सगला मिटाया
मन मेरा पूर्ण तेरे चरणों लगाया
दिन रात अब केवल तेरा ही नाम भाये
सन्तों में बैठी मीरा···

भजन

मेरे मन में मेरे भगवन
तुम अपना नाम रहने दो
तुम अपने नाम की भक्ति
सदा निष काम रहने दो
मेरे मन···

खुशी क्या उसके मिलने की
जो मिल कर के बिछुड़ जाये
मैं चाहती हु तड़फती हुँ
याद सुबह शाम रहने दो
मेरे मन···

नही मैं मान की भूखी
नही परवाह है शोरत की
तुम्हारा नाम हो जाये
मुझे बदनाम रहने दो
मेरे मन...

मेरे अरमान इज्जत के तुम ठेकेदार बन जाओ
तुम्हारा नाम हो जाये मुझे बदनाम रहने दो
अगर कटने नहीं देती सबर से जिदगी मेरी
तुम्हारा नाम हो जाये मुझे गुम नाम रहने दो
मेरे मन में...

भजन

मिलता है सच्चा सुख केवल
भगवान तुम्हारे चरणों में
यही विनती है पल पल छिन छिन
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में श्री राम तुम्हारे चरणों में

चाहे संकटों ने मुझे घेरा हो
चाहे चारों ओर अन्धेरा हो
पर मन न डगमग मेरा हो
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
मिलता है सच्चा

चाहें अग्नि में मुझे जलना हो
चाहे कांटों पर मुझे चलना हो
चाहे छोड़ के देश निकलना हो

रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
मिलता है सच्चा ··

जीहा पर तेरा नाम रहे
तेरी याद सुबह और शाम रहे
यह कामना आठो याम रहे
मिलता है···

भजन

अब तेरी शरणी आई
प्रभु तेरी शरणी आई
देखे सारे सहारे

प्रभु तेरी शरणी आई···
अब तू ही मेरा बन्धु
अब तू ही मेरा सहाई
मैं तेरी शरणी आई

पकड़ा अब तेरा द्वारा
अब तू ही हो मात पिताई
अब तेरी शरणी आई

ऐसी कृपा करना
मुझ को चरणों में रखना
तेरी शरणी में मैं आकर
कही और न अब मैं जाई
प्रभु तेरी शरणी आई

भजन

प्रभु अब तो दया करना
प्रभु अब तो कृपा करना
हम शरण मे आये है
प्रभु अब तो कृपा करना

नाचेगे वन के मोर
प्रभु आ के तेरे द्वारे
रख लेगे प्रीतम तूझे
मन मन्दिर के किनारे
दास अपना जान करके
हृदय से लगा रखना
प्रभु अब तो दया करो

तेरी ही गाथा गाँऊ
तुझ को ही मैं रिझाँऊ
ऐसी प्रीति लगा देना
प्रभु अब तो दया करना

जो भूल हो गई हो
उस को तोक्षमा करना
प्रभु अब तो दया करना
प्रभु अब तो कृपा करना

शरणागति

तेरी चरणों मे पड़ो दासी यह अनजान
चरण शरण की टेक है लाज राखो भगवान

II

पू ही मेरा बन्धु है तू ही मेरा साई
सगल आसरे छोड़ कर तेरो लग्न लगाई

III

चरण शरण की टेक है राखो मेरी लाज
दासी अपनी जान आके सवारो काज

IV

दाता बन्धु तुं हो मेरा पोषण हार
रक्षक मेरे आप ही हो तुम जग के नाथ हो

V

तेरा ही प्रभु आसरा तेरा ही प्रभु तेरा ही साथ
मन मन्दिर मेरे बसो हे अनाथ क नाथ
दासी अपनी जान कर क्षमा करो अपराध

तेरी शरणी आ पड़ी राखो मेरी लाज
चरण शरण की टेक है हे अनाथ के नाथ
मुझ पर कृपा कीजिए अपना दे कर हाथ

भजन

बिन भजन के जगत मे प्राणी
मौत पाने के काबिल नही है
क्या मुह लेकर जायेगा उस दर पै
मुह दिखाने के काबिल नही है
बिन भजन जगत ..

II

क्या वादा प्रभु से किया था
भूल कर नाम कभी न लिया था
भुल बैठा तू काया में हरि को
वो भूलाने के काबिल नही है
बिन भजन

III

जो तू वृथा में समय गवाँयो
अंत मे तेरे काम न आये
ऐसा सुन्दर जो नरतन मिला है
ये गवाँने के काबिल नही है
तेरे श्वासों के माला के जो मोती

IV

क्यों बिखर जाये मालुम नही है
बिन गुरु निगुर बन बन क्तों डोले
सिर उठाने के काबिल नही है

V

सच्चा सतगुरु तुझ को समझाये
आ शरण प्रभु की हिम्मत क्यों हारे
तेरे पैरों में बेड़ी परी है
तब तू आने के काबिल नही
बिन भजन के···

भजन

तुम से लागी लग्न
ले लो अपनी शरण
प्रीतम प्यारा जी
मेटो मेटो संकट हमारा

निश दिन मैं तुझ जपु
पर से नेहा तजु
जावन सारा
तेरे चरणों में विनय हमारा
मेटो मेटो जो···

बाबा नन्द के राज दुलारे
देवकी केसुत प्रभु प्यारे
सब से नेहा तोड़ा
जग से मुह को मोड़ा
सयमं धारा
मेटो मेटो जो सन्कट हमारा

सारी सत सगत शरण में आई
आ के तेरे ही मंगल गाई
आशा पुरी करो सदा
दुख नही पावे कदा
सेवक थारा
मेटो मेटो जी संकट···

जग के दुख की तो परवाह नही है
स्वर्ग सुख की भी चाह नही है
मेटोजामन मरण होवे ऐसा यत्न हो हमारा
मेटो मेटी···

लाखों वारतुम्हें शीश निवाँऊ
जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊ
दासी व्याकुल गई दर्शन प्यास रही
जीवन सारा
मेटो मेटो जी···

भजन

तू ठाकुर मैं पुजारी
आ जा रे साँवरियाँ
जीवन तुझ वारी
आ जा रे सावरिया
तु ठाकुर मैं पुजारी···

II

तू मेरा नाथ और मैं तेरी दासी
जन्म जन्म की प्यासी,
तुझ बिन जीआ नाही लागे
आ जाओ मन के वासी,
तेरे चरणों पै बलिहारी
आ जा रे सावरिया···

III

तेरा ध्यान करू मैं मन में
चिन्ता सब मिट जाये,
जब तू मेरे मन में आये
आनन्द आनन्द छा जाए,
तुझ पर वारी दुनियाँ सारी
आ जा रे सावरिया

IV

बड़े यत्न से तुझ को पाया
पाकर मन में बिठाया,
पल पल तेरा दर्शन कर लू
जीवन आनन्द आया,
तेरी छबि है बड़ी ही प्यारी
आ जा रे सावरिया···

V

ध्यान तेरा अब कभी ना टूटे
ऐसी प्रीति लागी,
तू मेरा, मैं तेरी हो गई

चरनन की अनुरागी,
तुझ पर जाऊं बलिहारी,
आ जा रे सांवरिया

VI

आशा तृष्णा मिट गई सारी
जब से दर्शन पाया,
तेरे प्यार की ज्योति जगा कर
सब कुछ अब बिसराया,
अब तू है मेरा मुरारी
आ जा रे सावरिया
तू ठाकुर, मैं पुजारी
आ जा रे सांवरिया

VII

आनन्द आनन्द छाया
चिन्ता सकल मिटाई,
तेरा सहारा पाकर प्रीतम
तेरी ही शरण आई,
अब जाऊं सदा बलिहारी
आ जा रे सावरिया

भजन

दर्शन दो घनश्याम नाथ मेरी अखियाँ प्यासी रे

I

मन मन्दिर में ज्योति जला लो,
घट घट वासी रे
दर्शन...

II

मन्दिर मन्दिर सूरत तेरी
फिर भी ना दीखे सूरत तेरी

द्वार दया का जब तू खोले
पचंम स्वर गूंगा बोले
अधुला देखे लगड़ा चल के
पहुंचे कांशी रे

दर्शन...

दोहे

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे ना कोय।
यह अभिलाषा हम सब की भगवान पूरी होय॥

I

विद्या बुद्धि विवेक बल सब के भीतर होय।
दूध पूत धन धाम से वंचित रहे न कोय॥

III

मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे नाम की, बनी रहे मम ईश॥

IV

पाप से हमें बचाइये कर के दया दयाल
अपना भक्त बनाये के सब का करो निहाल

V

दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार
हृदय में धैर्य धीरता सबको दो करतार

VI

नारायण तुम आप हो पाप के मोचनहार
क्षमा करो अपराध सब कर दो भवसागर पार

VII

हाथ जोड़ विनती करूं सुनिये दीन दयाल
साध संगत सुख दीजिए दया नम्रता दान

VIII

दीन दरद दुख भजना हरि घट घट नाथ अनाथ
शरण तुम्हारी आइयो दासो के प्रभ साथ

X

सगल द्वार को छोड़ के गहयो तुम्हारे द्वार
वाहे गये की लाज अस गोविन्द दास तुहार

X

जे मैं भुल बिगड़या न कर मैला चित
साहब गोरा लाडिये नफर बिगाड़े नित

अरदास

जैसा कैसा हूँ मैं तेरा
क्षमा करो सब अवगुण मेरा
जेता समुद्र नीर भरिआ तेते
अवगुण हमारे दया करो किछ मेहर उपाओ
डुबदे पत्थर तारे
जीअज अग्नि बराबर तपे भीतर वगै काती
पुणवत नानक हुक्म पछाने
सुख होवे दिन राती

वेद प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणनम त्वमेव
त्वमेव सर्वम मम देव देव

जय जय

श्री राम जय राम जय जय राम राम
शंकर हरिओ जय जय सिया राम
जय जय हनुमान

जय माता दी

१ मेला मेला मेला, मेरी लाडली दा मेला
चिन्तपूरणी दा मेला, ज्वाला माई दा मेला
कांगड़े वाली दा मेला ··

२ फूलां रानी दा मेला नैनां देवी दा मेला
कलकत्ते वाली दा मेला ··

३ जम्मू वाली दा मेला, कटड़े वाली दा मेला
मेरी वैष्णों माँ दा मेला

४ कजकां वाली दा मेला, भक्तां वाली दा मेला
मेरी संगताँ वाली दा मेला···

आरती अम्बे माता

जय अम्बे गौरी मैया जय श्याम गौरी ।
तुम को निशि दिन ध्यावत, हरि ब्रह्म शिवरी ।।
जय अम्बे...

माँग सिन्दूर विराजत, टीका मृग मद को
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ।।
जय अम्बे...

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठक पर साजे ।।
जय अम्बे...

केहरीवाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिन के दुखहारी ।।
जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्र मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, समराजत ज्योति ।।
जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशि दिन मदमाती ।
जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड सहारे, शोणित बीच हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।
जय अम्बे...

आरती अम्बे माता

जय अम्बे गौरी मैया जय श्याम गौरी ।
तुम को निशि दिन ध्यावत, हरि ब्रह्म शिवरी ।।
जय अम्बे...

माँग सिन्दूर विराजत, टीका मृग मद को
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ।।
जय अम्बे...

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठक पर साजे ।।
जय अम्बे...

केहरीवाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिन के दुखहारी ।।
जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्र मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, समराजत ज्योति ।।
जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशि दिन मदमाती ।
जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड सहारे, शोणित बीच हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।
जय अम्बे...

I

अनिक यत्न नही होत छुटारा
गहुत सयानप आगल भारा
हरि की सेवा निर्मल हेत
दरगह पावे शोभा सेत
मन मेरे गहो···

II

ज्यो बोहिथ भय सागर माही
अंधकार दीपक दीपाही
अग्नि शीत का लाहस दुख
नाम जपत मन होवत सुख
मन मेरे···

III

उतर जाये तेरे मन की प्यास
पूर्ण होवे सगली आस
डोले नाही तुम्हारी चीत
हर-२ नाम जप गुरु मुख मीत
मन मेरे···

IV

नाम अऊषद सोई जन पावे
कर कृपा जिस आर दिवावे
हरि-२ नाम जीके हृदय बसे
दुख दर्द तह नानक बसे
मन मेरे···

I

अनिक यत्न नही होत छुटारा
गहुत सयानप आगल भारा
हरि की सेवा निर्मल हेत
दरगह पावे शोभा सेत
मन मेरे गहो···

II

ज्यो बोहिथ भय सागर माही
अंधकार दीपक दीपाही
अग्नि शीत का लाहस दुख
नाम जपत मन होवत सुख
मन मेरे···

III

उतर जाये तेरे मन की प्यास
पूर्ण होवे सगली आस
डोले नाही तुम्हारी चीत
हर-२ नाम जप गुरु मुख मीत
मन मेरे···

IV

नाम अऊषद सोई जन पावे
कर कृपा जिस आर दिवावे
हरि-२ नाम जीके हृदय बसे
दुख दर्द तह नानक बसे
मन मेरे···

V

गुरु पितु मात बन्धु पति देवा,
सब मोही कह जाने दृढ़ सेवा,
अभी यही लालसा मन में लगी है ॥

VI

घर सुख वसिया बाहर सुख पाया,
कहो नानक गुरु मन दृढ़ाया
फिर आनन्द की सरिता उमड़ी है,
मेरे राम जी की आरती होने लगी है ।

प्रार्थना

हे सर्व शक्ति मान पिता,
हम आपके बच्चे हैं
आप हमारी रक्षा करना
हमें दुर्गुणों से बचाना
हमें सदगुण प्रदान करना
हम क्रोध को शान्ति से जीते
लोभ को संयम से जीते
मोह को प्यार से जीते
अहंकार को विनम्रता से जीते
पल पल में आपका ध्यान कर
हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना
सबके घर में सुख शान्ति देना
रोगों का नाश हो
क्लेश का नाश हो
बस यही प्रार्थना है
स्वीकार करो स्वीकार करो स्वीकार करो

कृपा-धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

कृपा धाम

-2B, Janak Puri, New Delhi-110058. Ph. : 25517225